ळकृष्ण ग्रंथमाळा. ग्रंथांक ४.

ॐ.

॥ श्री सद्गुरवे परमात्मने नमः ॥

श्री स्तवनमालिका.

लेखक.-पूज्यपाद श्री बालकृष्ण शर्मा
संस्थापक तथा संचालक,
श्री० बा० विद्यार्थी आश्रम.

प्रकाशक-केशवलाल छगनलाल देसाई
कपडवणज.

सं. १९८० श्रावण कृष्ण जयन्ति प्रत-१०००

पकारी जनोने विना मूल्ये मळवानुं ठे०
“० बा० विद्यार्थी आश्रम” गोमती तट;
डाकोर.

॥ ॐ तत्सत् ॥

॥ धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

परिचय.

आपणी सनातन भारतभूमि ! ए विश्वनियं-
ता योजायली कर्मभूमि अने प्रभुनी पुनित सृष्टि-
नो आदर्श छे. तेनां अनेक कारणो छे. तेमां सौथी
मुख्य कारण तो ए छे के सर्व धर्मोना मूळ,

अहिंयां (भारतमा)ज उत्पन्न थया छे, अने तेमनी द्वाराए दुनियाना तमाम भागने ऐहिक सुख तथा आमुष्मिक श्रेयनी साधनार्थे, कर्म, उपासना अने भक्तिज्ञानना खरा घुंटडा मळेला छे. तेवा कल्याण-दाता घुंटडा आधुनिक प्रजाने आ " श्री स्तवन-मालिका "थी प्राप्त थाओ ! ! !

अने —

आ संसारचक्रमा चालता प्राणीओनी भोजन-नी रुची भिन्न भिन्न प्रकारनी छे जेवी जेनी रुची, तेवु ते ग्रहण करी शके छे तेम सत, महात्मा अने भक्तजनोनी प्रभु प्राप्ति माटेनी रुची—रीत भिन्न भिन्न छे. ते परमात्मा तो एकज, जे सर्वाधार, सर्व-शक्तिमान, सर्व साक्षी अने सर्वेश्वर छे, तेने जेओ जे रीते उपासे छे तेवारुपे ते तेओने प्राप्त थाय छे.

तेम, आ "श्री स्तवनमालिका" भिन्न भिन्न प्रकारे भजवाथी सर्वने समरसे उपास्य थाओ ' ' '

तो —

आ श्री स्तवनमालिकानो परिचय आपवो आवश्यक नथी तेनु नामज ए तेनो देखीतो परिचय छे तेमा परब्रह्मना जूदा जूदा नामोना स्तवनो—स्तुतिओ छे तेमां कोई पण हिंदुधर्म या संप्रदायने बाधक थई पडे एवी स्तुति, हेतु पुर सर नथी. पण एथी उलटु सर्व धर्मने कइने कंई ईष्ट होय एवी योजना छे एटले आ धर्मग्रंथ सर्वग्राही मुक्तिदाता गणाय

अमारा प्रभु प्रेरणाथी स्थपाएला ' आश्रम ' मां तो आ ग्रंथने प्रभु तुल्य पूजवामां आवे छे एटले के तेनो नित्य पाठ थाय छे. प्रातःस्मरणादि

हमेशा प्रात काळमा थाय छे अने ए सिवायनां स्तवनो दररोजना नियत करेला वखत प्रमाणे हमेशां थया करे छे आवा कर्मथी अपूर्व आनद प्राप्त थाय छे ते तो अनुभवीओज जाणी शके छे तेथी आ परमात्माना सत्य तत्वनो आनद सर्व कोई जीज्ञासुओ एक सरखी रीते लई शके अने ते अखडानदनो अनुभव आ धर्म ग्रथ द्वारा वाङ्मय तपथी करी शके एवा हेतुथी आ चोथो अक तैयार करवामा आव्यो छे

अने –

कपडवणज निवासी परमश्रद्धालु वैष्णव रा. केशवलाल छगनलाल देशाईए, लोकोपयोगार्थे आ धर्मग्रंथने पोताने खर्चे छपावी अमारा आश्रममां अर्पण कर्यो छे तेओ पण आ "श्री स्तवनमालिकानो"

हमेशा पाठ करे छे अने प्रभुने रीझववा आ पवित्र ग्रंथ प्रकट करवामा तेओ धर्म रक्षण जोइ रह्या छे तो –

प्रिय पाठक ! आवा सज्जनोनु, आपणे परमात्मा पासे आरोग्य दीर्घजीवन याचीशु स्वधर्मनु रक्षण थवाथी ते रक्षायलो धर्म, पोतानुं ने प्रजानु रक्षण करे छे अने स्वधर्म हणावाथी ते हणायलो धर्म पोतानो अने प्रजानो एटले देशनो नाश करे छे, ए अबाधित नियम छे. माटे आपणा पूर्वजो प्राचीन ऋषिमुनिओथी लई अत्यारना थता अने थयेला सज्जन साधु, संन्यासी अने पवित्र ब्राह्मणोए पोत पोतानी प्रवृत्ति लोककल्याणमां धर्म रक्षणार्थे करी छे अने कर्या करवाना. तेम तुं पण आ सद्ग्रंथनो हमेशां पाठ करी स्वकल्याण करी, अन्यनुं ए कल्याण कर. पूज्य परमहंस चतुर्थाश्रमी संन्यासीओए नित्य पाठ

करवानो छे ते शातिपाठ तथा गुरोरभिवदन, आ " श्री स्तवनमालिका "मा छे तेथी तेओने पण आ ग्रंथ उपयोगनो छे

आ परब्रह्मना–प्रभुना जाप जपावी मुक्ति मार्गे लई जनार पवित्र ग्रंथ छे तेथी तेने कोइए नीचे जमीन उपर न मुकवो पण तेना उपर बाधण बांधी जीवनी माफक जतन करवु अने खूब ध्यान पूर्वक वाची विचारवो एटले तेमाथी नीकळता परमात्मानां तत्वो तमारु अवश्य जतन करशे ए रीते आ ग्रथनो परिचय करी परमात्म स्वरुपने पामो !!! तथास्तु ॥

प्रभु सर्वनु कल्याण करो !

बालकृष्ण शर्मा,
" श्री. ब्रा० विद्यार्थी आश्रम."
डाकोर.

॥ ॐ तत्सत् ॥

॥ श्री सद्गुरवे परमात्मने नमः ॥

॥ प्रातःस्मरणम् ॥

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वम् ।
सच्चित्सुख परमहंसगतिं तुरीयम् ॥
यत्स्वप्न जागर सुषुप्तमवैति नित्यम् ।
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूत संघः ॥१॥

भावार्थ.–हुं प्रात काळमां हृदयमा स्वय प्रकाशरुप स्फुरायमान आत्मतत्वने स्मरुं छुं, जे सत्,

चित् अने आनंद स्वरुप छे, जे परमहसोनी गति, तुरीयस्वरुप, जागृत, स्वप्न अने सुषुप्तिना द्रष्टा, उत्पत्ति नाशरहित, अने जे निरवयव, सर्वव्यापक परमात्मा छे ते ब्रह्म हुं छु पचभूतोना समुदायरुप पिंजर ते हु नथी अर्थात् देह ते हुं नथी ए प्रकारे स्मरण करु छु १

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यम् ।
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ॥
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचु-
स्त देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥ २ ॥

भावार्थः—मन अने वाणीथी जे अगम्य छे, अने सर्ववाणी जेना अनुग्रहवडे प्रकाशमान थाय छे जेने निगम—वेदो 'नेति नेति' अर्थात् न इति, न ति एवो ते नथी, एवो ते नथी एम कही कथन

करे छे, ते देवना देव अनादि, नाश रहित, आत्म-
तत्वने हु प्रात काळमां भजु छु । २ ॥

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णम् ।
पूर्णं सनातनपद पुरुषोत्तमाख्यम् ॥
यस्मिन्निद जगदशेषमशेषमूर्त्तौं ।
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रति भासितं वै ॥३॥

भावार्थः—अधकारथी पर, परम प्रकाशस्वरुप, सर्वत्रपूर्ण, नित्यानिरंतर रहेवावाळा, जेमा आ समग्र ससार विवर्तरुपे रज्जु (दोरडी)मा सर्पनी पेठे भासमान थइ रह्यो छे एवा ते सर्वोत्तम आत्मतत्वनु हुं प्रा त काळमा ध्यान धरु छु ३

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ॥४॥

भावार्थः—हे समुद्रमा वास करनारी, हे पर्व-

तरुणी स्तनमंडळवाळी, हे विष्णुपत्नि, हे देवी !
रामा पादस्पर्शने क्षमा करो ४

ॐ.

ब्रह्मानंद परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं ।
द्वंद्वातीत गगनसदृश तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्य विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहित सद्गुरुं त नमामि ॥५॥

भावार्थ —ब्रह्मानदरुप, परम सुख आपनार, केवळ, ज्ञान मूर्तिरूप, सुख दु खादि द्वदथी अतीत (वेगळु) आकाशवत् व्यापक (सर्वाधार) निर्मळ तत्वमस्यादि महावाकय वडे ओळखाय एवु, एक, नित्य, निर्मळ, अचळ, सर्वबुद्धिना साक्षीभूत, भावथी अतीत, त्रणे गुणथी रहित एवा ब्रह्मरुप सदगुरु परमात्माने हु नमस्कार करुं छु ५

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

भावार्थ—गुरु एज ब्रह्मा छे, गुरु एज विष्णु अने गुरुदेव एज महेश्वर—महादेव छे. अने गुरु एज परब्रह्म स्वरुप छे. एवा श्री सद्गुरु परमात्माने हुं नमस्कार करुं छुं ६

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥७॥

भावार्थ—अज्ञानरुपी अंधकारमा आंधळा थई गयेलाने ज्ञानरुपी अंजनी—सळी वडे जेणे चक्षु खोली आप्या छे एवा सद्गुरु देवने मारा नमस्कार छे ७

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

भावार्थ —अखड मडलरुप आकारवाळुं, सचराचर जेनाथी व्याप्त छे एवु "तत्" पद जेणे ओळखाव्यु छे एवा सद्‌गुरु देवने मारा प्रणाम ८

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥९॥

भावार्थ —वक्र मुखवाळा, म्होटा शरीरवाळा, करोडो सूर्यना सरखी कान्तिवाळा हे, गणेश ! सर्वदा सर्वकार्योमा सिद्धिदाता देव ! म्हारा कार्यने निर्विघ्नताए परिपूर्ण करो !!! ९

यतोऽनंतशक्तेरनताश्च जीवा ।
यतो निर्गुणाद प्रमेया गुणास्ते ॥
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेद भिन्नम् ।
सदा त गणेश नमामो भजामः ॥ १० ॥

भावार्थ —जे त्हारी अनत शक्ति वडे, अनंत

प्राणीओ प्रकाशित थाय छे, जे त्हारा निर्गुणथी अनेक गुण उत्पन्न थाय छे, तथा जे त्हाराथी ए सर्व त्रिविध भेदने प्राप्त थईने प्रकाशित थाय छे तेवा तु—गणेशने नित्य निरतर अमे प्रणाम पूर्वक सेवीए छीए १०

यतो वेदवाचो विकुठा मनोभिः ।
सदा नेति नेतीति यत्ता गृणंति ॥
परब्रह्मरूपं चिदानंदभूतम् ।
सदा त गणेशं नमामो भजामः ॥ ११ ॥

भावार्थ—जे त्हारा सामर्थ्यने वेदनी वाणी 'नेति नेति' कहीने स्वीकार करे छे जे त्हारा रुपने मन पण ग्रहण करी शकतुं नथी ते परब्रह्मरुप सत्, चित्, आनंदनो आधार गणपति तने अमे प्रणाम पूर्वक सदा सेविए छीए ११

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१२॥

भावार्थ –शान्त–त्रिगुणथी रहित छे आकार जेनो, शेष (नाग) छे शय्या जेनी, नाभि (डूटी) मा छे कमळ जेना, देवोना छे ईश जे, विश्वना छे धारण कर्त्ता जे, निराकार छे आकार जेनो, मेघ जेवुं छे स्वरुप जेनुं, खुबसुरत छे अंग जेनु, लक्ष्मीना छे पति जे, नीलकमल जेवा छे नेत्र जेना, योगी-अनोज ध्यानथी जाणी शके छे जेने, संसारना दु खोनो नाश करनार तथा सर्व लोकोना एकज स्वामी छे जे, एवा श्री विष्णु भगवानने हु वदन–प्रणाम करुं छुं १२

श्री नृसिंहं महाबाहुं महांतं दीप्ततेजसम् ।
चिदानंदमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम् ॥१३॥

भावार्थः—जे नित्य, सत्, चित्, आनंदघन छे. जे प्रणवगम्य, ज्योति स्वरुप, दिव्य प्रकाशथी प्रकाशित, ने म्होटी भूजाओवाळा छे. एवा श्री नृसिंह भगवानने हु प्रणाम करु छुं. १३

शरीरं वैकुंठं हृदयनलिनं वाससदनं ।
मनोवृत्तिस्तार्क्ष्यो मतिरियमथ सागरसुता ॥
विहारस्तेवस्थात्रितियमसवपार्षदगणो ।
नपश्यत्यज्ञस्त्वामिहवहिरहोयाति जनता ॥१४॥

भावार्थ·—हे नाथ ! आ शरीर वैकुंठ छे तेमा हृदय कमळ आपनुं निवास स्थान छे मननी वृत्ति ते गरुड छे. अमारी बुद्धि ते लक्ष्मी छे. जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति आपने विहार करवानी भूमि छे. अने

प्राण आपना पार्षद (गण) छे परतु आपने एवा न जाणवाथी लोक अहिंतहि भटकता फरे छे ए केटलु आश्चर्य छे ? १४

आत्मा त्व गिरिजामतिः सहचराः
प्राणाः शरीरं गृह ।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा
समाधिः स्थितिः ॥
संचारः पदयाः प्रदक्षिणविधिः
स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं
शंभोतवाराधनम् ॥ १५ ॥

भावार्थ—हे प्रभो ! आप आत्मा छो, श्री महा माया पार्वती बुद्धि छे, प्राणो ए आपना गण छे, शरीर ए घर छे, विषयोनो विलास ए आपनी

पूजा छे विराम—शयनकरवु—उघवु एज समाधि छे आम तेम रूडी रीते फरवु एज आपनी प्रदक्षिणा छे सपूर्ण बोलचाल ए आपनी स्तुति छे हे कैलाश निवासिन् ! हे दयामय ! हुं जे जे कर्म करुं छु, करीश अने करी चूकयो छु ते सर्व आपने प्रसन्न करवा माटेना हो. एज अमारी सदोदित याचना छे १५

करचरणकृत वाक्कायज कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥१६॥

भावार्थः—हे नाथ ! अमारा हाथोथी, पगोथी, शरीरथी, कर्मथी, कानोथी नेत्रोथी, मनथी, जाणे के अजाणे, योग्यायोग्य जे कई अपराध थया छे ते सर्वने आप क्षमा करो हे करुणाना समुद्र !

हे देवाधिदेव ! हे श्रीशंभो ! आपनो जय थाओ ! जय थाओ ! जय थाओ !!! १६

यन्मंडलं दीप्तकरं विशालं रत्नप्रभं
तीव्रमनादि रूपम् ॥
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां
तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १७ ॥

भावार्थ—जेनुं मंडल महान् प्रकाशक अने रत्नोनी समान झगझगित कान्तिवाळुं, अनादि तथा दारिद्र ने दुःखोनो नाश करवावाळुं छे एवा ते स्वीकार करवा योग्य श्री सूर्यनारायण मने पवित्र करो !!! १७

यन्मंडलं देवगणैः सुपूजितं विप्रैः स्तुतं
भावनमुक्तिकोविदम् ॥
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां
तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १८ ॥

भावार्थ—जेनु मडळ देवगणोथी पूजाएलुं, ब्राह्मणोए स्तुति करेलुं, तथा श्रद्धाळुने मुक्ति आपवावाळुं छे ते देवना देव श्री सूर्यने हु प्रणाम करुं छुं. ते श्रेष्ठ सूर्यदेव मने पवित्र करो १८

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां
भीषणाम् ।
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरा
सेविताम् ॥
हस्तैश्चक्रदरालिखेटविशिखांश्चापं गुण
तर्जनीम् ।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां
त्रिनेत्रां भजे ॥ १९ ॥

भावार्थ—विद्युतवल्लि (विजळीना लीसोटा) जेवी चमकदार कान्ति छे जेनी, सिंहनी स्कंध उपर

स्वारी करी छे जेणे, धर्मथी विमुख दुष्टोने मारवा माटे उग्र छे स्वरुप जेनुं, हाथमा चक्र, खप्पर, दड अने बाणने धारण कर्यां छे जेणे तथा टकार करता धनुषने धारण करी रही छे जे, अग्नि जेवी दिव्य, मस्तक उपर चद्रमा छे जेना, तथा त्रण नेत्र छे जेने अने उत्तम पदार्थोंथी शोभित छे हाथ जेना एवी कन्याओथी सेवायेल छे जे, एवी जगत जननी दुर्गानु अमे सेवन करीए छीए १९

नमोस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै।
नमोस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै॥
नमोस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै।
नमोस्तु दामोदर वल्लभायै॥ २०॥

भावार्थ—हे आनंदने आपवावाळी देवी! तने नमस्कार छे हे विष्णुना वक्षस्थळ (छाती) उपर

निवास करनारी भगवति ! तने नमस्कार छे हे कमळ मध्ये निवास करवावाळी महालक्ष्मि ! तने नमस्कार छे हे कृष्ण प्रिये तने नमस्कार छे २०

आवाहनं यजनवर्णनमग्निहोत्रं ।
कर्मार्पणं तव विसर्जनमत्र देवी ॥
मोहान्मया कृतमिद सकलापराध ।
मात क्षमस्व वरदे बहिरन्तरस्थे ॥ २१ ॥

भावार्थः—हे अंब ! में अज्ञान वश थईने जे त्हारा आवाहन, यजन, वर्णन, अग्निहोत्र, कर्मार्पण तथा विसर्जनादि कार्यरुपी, अपराध कर्या छे ते हे जननी ! हे सर्वैश्वर्यने आपवावाळी माता, ते अपराधने क्षमा करो, केमके तुं सर्वव्यापक तथा अनत सामर्थ्य युक्त छे २१

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्र-
वस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत-
पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा
वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष
जाड्यापहा ॥ २२ ॥

भावार्थ –जे कुन्द पुष्प तथा बरफ अने हार जेवी सफेद कान्तिवाळी छे जेणे सफेद वस्त्र धारण कर्यां छे. जेना हाथ वीणा, वरदान तथा दण्डथी शोभित छे सफेद कमळ आसन छे जेनुं ब्रह्मा, विष्णुं अने शंकरादिक देवताओ जेनुं वंदन करे छे जे अज्ञाननो नाश करे छे ते शारदा, सरस्वती भगवती म्हारी रक्षा करो २२

शशि शुद्धसुधा हिमधामयुतं ।
शरदम्बरबिम्बसमानकरम् ॥
बहुरत्नमनोहरकान्ति युतं ।
तव नौमि सरस्वती पादयुगम् ॥ २३ ॥

भावार्थ —पूर्णिमाना चद्रमा, अमृत अने बरफ जेवी कान्ति छे जेनी, शरद ऋतुना वादळ जेवा हाथ छे जेना, अने असख्य दिव्य रत्नोथी दिप्त छे तेज जेनुं, एवी हे सरस्वती ! त्हारा बंने चरणोने हु प्रणाम करु छु. २३

भवसागरमज्जनभीतिनुतं ।
प्रतिपादितसंततिकारमिदम् ॥
विमलाधिकशुद्धविशुद्धपदं ।
तव नौमि सरस्वती पादयुगम् ॥ २४ ॥

भावार्थ.—हे संसार समुद्रमां डूबेला दु खी मनुष्योना दुःखोनो नाश करवावाळी ! हे उत्तम

ज्ञाननी वृद्धि करवावाळी ! हे अत्यत विमल—शुद्र-तर चरण कमळोवाळी सरस्वती ! त्हारा सर्वामिष्ट-प्रद चरणकमळोने हुं प्रणाम करु छु २४

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माक सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।

भावार्थ—हे प्रफुल्लित शरद ऋतुना कमळ सरखा मुखवाळी, हे सर्वाभिष्टने आपवावाळी, हे भगवती शारदम्ब ! कृपा करीने तमे नित्य अमारा ज्ञाननी वृद्धि करो ! ! ! २५

तत्त्वं न जानंति परमात्मनस्ते ।
जनाः समस्तास्तव माययातः ॥
त्वद्भक्तसेवामलमानसानां ।
विभाति तत्त्वं परमेकमैशम् ॥ २६ ॥

भावार्थः—हे प्रभो ! आपनी मायामा फसेल

पुरुष, आपना परम तत्वने नथी जाणता. किंतु हे नाथ ! आपना भक्तोनी सेवा करवाथी पवित्र थया छे अंत करण जेनां, एवा मनुष्योनेज आपनुं परम ऐश्वर्य संबंधी स्वरुप जाणवामा आवे छे (तेथी कृपा करीने आप अमने आपना परम भक्तोनी सेवानु फळ आपो) २६

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय ।
नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ॥
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय ।
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥ २७ ॥

भावार्थः—हे सत्‌रुप, जगतना कारण, ज्ञान-स्वरुप, सर्वलोकना आश्रय, अद्वितीय, मुक्तिदाता, नित्य तथा सर्व व्यापी परब्रह्म ! तमने नमस्कार छे २७

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं ।
त्वमेकं जगत्पालक स्वप्रकाशम् ॥
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ ।
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥ २८ ॥

भावार्थ—तमे एकज सर्वना रक्षक, जगतना पालक, स्वप्रकाश, जगकर्ता, पालनकर्ता, श्रेष्ठ अने निश्चळ तथा निर्विकल्प छो २८

भयानां भयं भीषणं भीषणानां ।
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ॥
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेक ।
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥ २९ ॥

भावार्थ—वळी तमे एकज भयना भय, भयंकरोमा भयंकर, प्राणीओनी गति, पवित्रना पवित्र, उचामा उचा स्थानना नियंता, श्रेष्ठमा श्रेष्ठ तथा रक्षणना पण रक्षण छो. २९

वयं त्वां स्मरामो वय त्वां भजामो ।
वयं त्वां जगत् साक्षिरूपं नमामः ॥
सदेकं निधानं निरालंबमीशं ।
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥ ३० ॥

भावार्थ—आ संसारना साक्षिरुप तमने अमे स्मरीए छीए—भजीए छीए तथा नमीए छीए सत्य स्वरुप, विश्रान्ति स्थान, निरालंब, भवसागर तरवानी नौका, एवा तमे एक ईश्वरने अमे शरण छीए. ३०

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ३१

भावार्थ.—हे सर्वान्तरयामी जगदीश्वर ! हुं राज्यनी इच्छा नथी करतो, स्वर्गनी इच्छा मने नथी अने मोक्षनी इच्छा पण मने नथीज. किंतु

दु:खथी पिडित मनुष्योना दु खोनो नाश जेनाथी थाय ए उपाय हुं मागु छु कृपा करीने आप मने दु खी मनुष्योना दु ख हठाववानी शक्ति आपशो २१

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां ।
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ॥
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं ।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ २२ ॥

भावार्थ —जे राजाओ न्याय पूर्वक राज्य चलावे छे ते प्रजानुं कल्याण हो ! (थाय छे) नित्य गौब्राह्मणोनी वृद्धि थाओ अने सपूर्ण संसार सुखी थाओ!!२२



|| ॐ तत्सत्परमात्मने नम ||

|| उपनिषद्-शांतिपाठः ||

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
|| ॐ शांतिः शांतिः शांतिः || १ ||

शब्दार्थः—ते (उपाधि रहित ब्रह्म) पूर्ण छे, आ (उपाधि सहित ब्रह्म पण) पूर्ण छे. (कारणके) पूर्णथी पूर्ण वृद्धि पामे छे. पूर्णना पूर्णने लेता पण

पूर्ण अवशेष रहे छे (उपाधि रहित ब्रह्ममाथी उपाधि सहित ब्रह्मने लई लेवामा आवे तो उपाधि रहित शुद्ध ब्रह्मज रहे छे.) ॐ शांति. शांतिः शांति. एटले हे परमात्मन् ! अमने आध्यात्मिक, आधिदैविक, तथा आधिभौतिक शांति आपो १

ॐ आप्यायतु ममाङ्गानि वाक् प्राण-श्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्व निराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु मयि सन्तु ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ २ ॥

शब्दार्थ.—म्हारा अंगो वृद्धि पामो वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, अंत करण तथा सर्वे इन्द्रियो वृद्धि पामो. हुं सर्व वेदनो तथा उपनिषद्रुप ब्रह्मनो त्याग न

करुं. ब्रह्म म्हारो त्याग न करो. अमारी परस्पर प्रीति थाओ. अमारी परस्पर प्रीति थाओ उपनिषद्मां जे शमादि धर्मो रहेला छे. ते धर्मो म्हारामां हो ! म्हारामां हो !

ॐ शांति. शांति शांति ॥ २

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ३ ॥

शब्दार्थः—ते परमेश्वर खचीत अमारुं (गुरु शिष्यनु) पालन, रक्षण करो ते फळने प्रकाश करी अमारुं रक्षण करो खरेखर अमोने ब्रह्मविद्याने माटे सामर्थ्य आपो अमे जे कांई अध्ययन कर्युं होय ते प्रकाशयुक्त थाओ अमोने परस्पर द्वेष न थाओ.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ३

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्व-वेदाः स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ —हे प्रभो ! अमे श्रोत्र वडे (वेदान्तथी उत्पन्न थयेला) कल्याण कारक वचनोने साभळीए यजत्र—अर्थात् उपदेष्टाना स्वरुपने अथवा परमात्माना स्वरुपने जोइए. स्थिर अर्थात् विषय वृत्तिथी शून्य एवा अवयवो वडे अमे ब्रह्मात्मक श्रुतिवचनथी आपनी स्तुति करीए हे देव ! आपनी कृपाथी रोगथी रहित एवा दीर्घायुषने अमे

पामीए महान् कीर्तिवाळो इन्द्र अमोने ब्रह्मानंद आपे सर्वज्ञ एवा सूर्यदेव अमारु कल्याण करो अकुंठित गतिवाळा गरुड अमारु कल्याण करो तेमज बृहस्पति अमारु कल्याण करो ॐ शांति शांति शांति ॥ ४

॥ ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ —मित्र अमारु सुख करनार थाओ

वरुण अमारु सारु करो अर्यमा (सूर्य) अमारुं सारु करो. इन्द्र तथा बृहस्पति अमारू सारुं करो. ब्रह्मने नमस्कार छे हे वायुदेव ! आपने नमस्कार छे आप प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवरुप छो आपने प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवरुप कहीश हु आपने प्राणवायुरुप कहीश हुं आपने सत्यरूप कहीश. समष्टिरुप ब्रह्मदेव, व्यष्टिरुप म्हारु पालन करो वक्तानुं (आचार्यनु) पालन करो ब्रह्मदेव म्हारु रक्षण करो वक्तानु ब्रह्मदेव रक्षण करो ॐ शाति शाति शाति ॥ ५

ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः श्रुत मे मा प्रहासीरनेनाधीते- नाऽहोरात्रात्संदधाम्यृत वदिष्यामि । सत्यं

वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतुमाम् । अवतु वक्तारमवतु वक्तारम् ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ६ ॥

शब्दार्थः- –वाणी मारा मनमा स्थित थाओ. म्हारु मन वाणीमा स्थिति पामो हे आत्मन् ' म्हारे माटे प्रकट थाओ हे वाणी तथा मन ' म्हारे माटे वेद लाववा समर्थ थाओ म्हारु श्रवण करेल म्हारो परित्याग न करो हु दिवस तथा रातने आ अध्ययन-वडे जोडुछुं हु शास्त्रथी निश्चय करायेल बुद्धिवडे कहीश हु सत्य अर्थात् शास्त्रना निश्चय पहेलानी बुद्धि वडे कहीश ते म्हारु रक्षण करो ॐ शांति शांति शांति ॥ ६

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः ॥ छन्दो

भ्योऽध्यमृतात्सबभूव ॥ स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु ॥ अमृतस्य देवधारणो भूयासम ॥ शरीर मे विचर्षणम् ॥ जिह्वा मे मधुमत्तमा ॥ कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम् ॥ ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः ॥ श्रुतं मे गोपाय ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ७ ॥

शब्दार्थ —जे विश्वरुप सर्वेश्वर वेदोमा श्रेष्ठ छे, छन्दोमा ध्यानथी उत्पन्न थया छे, ते सर्वान्तरयामी इन्द्र मने पवित्र बुद्धिथी युक्त करो. यथार्थ ज्ञानना धारण करवावाळो हु थाउ म्हारु शरीर पुष्ट थाओ म्हारी वाणी मधुर बोलवावाळी बनो कानोथी हुं पवित्र ज्ञाननु श्रवण करुं हे इन्द्र ! तु ब्रह्मज्ञाननो खजानो बुद्धिमां स्थित छे जे वेदान्तादि उत्तम शास्त्रनु हु श्रवण करु छु, करीश अने करी

चूक्ये छु ते सर्वनी तमे रक्षा करो "' ॐ शांति शांति शांति ॥ ७

ॐ अहं वृक्षस्य रेरिव ॥ कीर्तिः पृष्ठ गिरेरिव ॥ उर्ध्वपवित्रो वाजिनीवस्वमृतमस्मि॥ द्रविणं सवर्चसम् ॥ सुमेधा अमृतोक्षितः ॥ इति त्रिशङ्कोर्वेदानु वचनम् ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ८ ॥

शब्दार्थः--हे नाथ ! हु ससाररुपी वृक्षनो छेदक बनु जेवी रीते कैलास पर्वतनु उच्च शिखर सर्व विश्वमां प्रसिद्ध छे तेवी रीते म्हारी कीर्ति सुप्र-सिद्ध हो ! हुं सर्वथी वधारे पवित्र अमृतरुप सूर्यनी माफक सर्वनो प्रकाशक बनुं. अमारा द्रव्यादि पदार्थो, ब्रह्मवर्चस अने सदबुद्धि सदा अमर रहो !"

ॐ शांति शांति शांति ॥ ८

ॐ भद्रं नो अपिवातय मनः ॥

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—हे प्रभो ! म्हारु मन आपनी कृपाथी शुभ—पवित्र सकल्पवाळुं हो ! ! !

ॐ शाति शांति शाति ॥ ९

ॐ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ न ह देवमात्मबुद्धि-प्रकाश मुमुक्षुर्वै शरणमह प्रपद्ये ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥१०॥

शब्दार्थ—जेणे पहेलां ब्रह्माने उत्पन्न कर्या अने तेमने वेदोनुं ज्ञान आप्यु, ते प्रकाश स्वरुप, आत्माना प्रकाशक देवनी, हु ज्ञाननो अभिलाषी शरणने प्राप्त थाउ छुं

ॐ शाति शाति शांति ॥ १०

॥ ॐ श्री सद्गुरवे परमात्मने नमः ॥

॥ श्री गुरोरभिवंदनम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदाय-कर्तृभ्यो वंश ऋषिभ्यो महद्भ्यो नमो गुरु-भ्यः । सर्वोपप्लव रहितः प्रज्ञानघनः प्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि ॥ १ ॥ ॐ हर हरिं पद्मभव वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च । व्यासं

शुकं गौडपदं महान्त गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य
शिष्यम् ॥ २ ॥ श्री शंकराचार्यमथास्य
पद्मपाद च हस्तामलकं च शिष्यम् ॥ तं त्रोटक
वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून्सततमानतोऽस्मि ॥
॥ ३ ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणा-
लयम् ॥ नमामि भगवत्पादं शंकरं लोक श
करम् ॥ ४ ॥ शंकरं शंकराचार्यं केशव बादः-
रायणम् ॥ सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ
पुनः पुनः ॥ ५ ॥ ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्ति-
भेद विभागिने ॥ व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षि-
णामूर्तये नमः ॥ ६ ॥

॥ अनध्यायमङ्गलपाठः ॥

अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभ संत-
तिम् ॥ स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्म तन्मङ्गलं
परम् ॥ १ ॥ अतिकल्याणरूपत्वान्नित्य
कल्याण संश्रयात् ॥ स्मर्तॄणां वरदत्वाच्च ब्रह्म
तन्मङ्गलं विदुः ॥ २ ॥ ॐकारश्चाथ शब्दश्च
द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा ॥ कण्ठं भित्त्वा विनिर्या-
तौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ ॥ ३ ॥ हरिः ओम्
तत्सत् परब्रह्मार्पणमस्तु ॥

॥ ॐ तत्सत् ॥

॥ अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः ॥

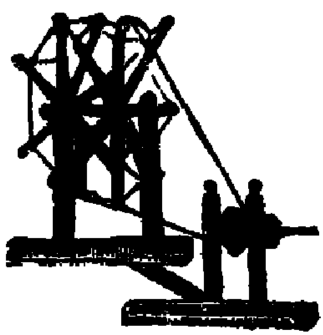
॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे । स मे कामान्कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वै श्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्य भौज्यं स्वाराज्य वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य काममर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देवऽएकः ॥ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुकपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः । मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ प्रार्थना ॥ विघ्नेश्वराय

वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

॥ इति श्री स्तवनमालिका समाप्ता ॥

॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥



वर्तमान ब्रह्मचर्याभास प्रकरणः—

'आश्रम 'ना ब्रह्मचारीओए भजवेलो, आधुनिक लोकरुढिने दर्शावी सत्यज्ञान तरफ दोरतो एक रमुजी बोधप्रद संवाद छे फकत दोढ आनानी पोष्टनी टीकेटो मोकलवाथी बहार गामना जीज्ञासु जनोने ते बुक पोष्टथी मोकली आपवामां आवे छे

श्री यजुर्वेदीय त्रिकाल संध्याः—

फक्त अर्धाआनानी पोष्टनी टीकटो मोकलवाथी बहारगामना जीज्ञासुजनोने ते बुकपोष्टथी मोकली आपवामा आवे छे. आ संध्यामा संध्या करवा माटेनो शब्दार्थ छे.

अमदावाद निवासी शेठ मफतलाल चुनीलाल

शाह, एमणे ए धर्म ग्रथने पोताने खर्चे छपावी ब्रह्मार्पण कर्यो छे.

श्री शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिनी वाजसनेयी शाखाध्यायि ब्रह्मचारीणा:—

॥ साय प्रातर्होमविधिः ॥

आ, द्विजना समावर्तन संस्कार थया वगरना ब्रह्मचारीओने खास अगत्यनो होवाथी (आ होम विधि) लखी तैयार करवामा आव्यो छे तेने वाडा-सीनोर, श्री वि. स्मा पाठशाळाना अध्यापक शास्त्रीजी पुरुषोत्तम शर्माए पोताना स्व. पिताश्री पीताम्बरना स्मरणार्थे छपावी 'आश्रम'मा अर्पण कर्यो छे. बहार गामना जीज्ञासुओने, अर्धा आना-

नी पोष्टनी टीकेटो मोकलवाथी ते बुकपोष्टथी मोकली आपवामा आवशे.

सरनामुं –

व्यवस्थापक –' श्री० ब्रा० विद्यार्थी आश्रम "

गोमती तट डाकोर.

डाकोर, " श्री० ब्रा० विद्यार्थी आश्रमयां " अनायासे मळी आवेला संस्कारी जनोनुं दान स्वीकाराय छे.

॥ सर्वभवन्तु सुखिन ॐ शांति शांति शांति ॥

मुद्रक—नटवरलाल शंकरलाल महेर
मुद्रणस्थान—विवेकानंद मुद्रणालय, का
अमदावाद